गृहलक्ष्मी

५

फरवरी १९७७

Feb, 1977

2016.05/030.0101

कोंकणी थियेटर

● गोवा के निवासियो का कोंकणी नाटक, जो 'तियात्र' के नाम से प्रसिद्ध है, २०० वर्षों से अधिक से उनका प्रमुख मनोरंजन का साधन है। यहां के मूल नाटक और यहां के भूतपूर्व अधिपति पुर्तगालों के 'रेसिटा' या 'रेसिटेशन' को मिलाजुलाकर इसका यह स्वरूप बना है। 'तियात्र' नाटक की कथावस्तु साधारणतः यहां के ईसाई निवासियों के समसामयिक जीवन से सम्बन्ध रखती है। नाटक पर मराठी नाट्य और हिन्दी फिल्मों का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित है। गोवानियों की भाषा, वेशभूषा, पारिवारिक-जीवन, बौद्धिक व सामाजिक क्रियाकलापों एवं सांस्कृतिक आचार-विचारों का दिग्दर्शन 'तियात्र' में भरपूर मिलता है।

१६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब यहां की धरती पर पुर्तगालियों ने पैर रखा तब यहां का नाटक था 'ज़ागोर' या 'जगर'। अभी भी गोवा की पिछड़ी जनजातियों में, खासकर गावड्डों में यह नाट्यविधा मौजूद है। मुक्ताकाश या खुली रंगभूमि में कलाकारों द्वारा चकमक व खूब रंगबिरंगे परिधानों को पहनकर 'ज़ागोर' या 'जगर' खेला जाता है। एक प्रकार से यह समाज पर व्यंग होता है जिसे लोग खूब पसन्द करते हैं।

समय के साथ 'ज़ागोर' या 'जगर' का स्वरूप बदलता गया और जिसे 'तियात्र' कहते हैं उसका जन्म हुआ। पुर्तगाली शब्द 'तियात्रों' से 'तियात्र' बना। गोवा का लोक-नाट्य 'खेल' भी 'तियात्र' से इस बीच प्रभावित हुआ। दोनों में फ़र्क यह है कि 'खेल' किसी हॉल या पण्डाल में ही किया जाता है जबकि 'तियात्र' उत्सवों के दिनों में घूमते फिरते कहीं भी किया जाता है।

हालांकि 'तियात्र' काफी लम्बे अरसे से सर्वसाधारण के मनोरंजन का साधन रहा है, फिर भी सन् १८९० में जाकर दो गोवानी कलाकार—जोआओ अगोस्तिन्हो फर्नान्डेज़ और लुकास रिवेरो (जो दोनों मिलकर लुकाजिन्हों के नाम से मशहूर थे)—बम्बई शहर में कोंकणी नाटक कर पाये। नौकरी की तलाश में बम्बई आये इन दोनों कलाकारों ने एक पेशेवर ग्रुप गठित किया, नाम रखा पोर्चुगीज़ ड्रामाटिक कम्पनी और पहला नाटक किया 'इटालियन बर्गो' (इतालवी लड़का)। बम्बई शहर के गोवानी आप्रवासियों के बीच यह नाटक ख़ूब सफल रहा। शीघ्र ही अन्य ग्रुप भी बने और जिन्हें अत्यधिक सफलता मिली वे थे—'लुसिटानियन कम्पनी' एवं 'डोन कार्लोस कम्पनी'। दो अन्य नाट्यदलों को भी बम्बई के गोवानियों के मध्य प्रसिद्धि मिली, वे थे—'डुगलास ड्रामाटिक कम्पनी' और 'गोवान युनियन'। जब कोंकणी नाटक के इस स्वरूप की जड़ें बम्बई में जम गयी तब जोआओ अगोस्टिन्हों फर्नान्डेज़ ने एक अन्य प्रतिभाशाली गोवानी कलाकार ए० आर० सूज़ा फेराओ के साथ मिलकर इसे गोवा में ले जाने का विचार किया। उन्होंने वहां सामाजिक व ऐतिहासिक अनेक नाटक किये जैसे 'डोतिचेम केस्टाओ' (दहेज़ का प्रश्न), 'भतकार' (जमींदार) और 'बेब्डो' (पियक्कड़) आदि।

फर्नांडिस की सन् १९४७ में मृत्यु हुई। उसने अपने पीछे कोंकणी-नाट्य की एक समृद्धशाली परम्परा छोड़ी जिसे बाद के अनेक कलाकारों ने आगे बढ़ाया। इन कलाकारों में सूज़ालिन, साइब रोश, अर्नेस्ट रेबिलो, एन्थोनो टूलू, पैट्रिक फायरमैन, लुइस बोर्गेस, पाक्लो, ईर्मिलिंड कार्लोट और कूगा आदि अधिक यशस्वी हुए। ००

(स्टेट्समैन से साभार)